Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247**
Vol. VIII. 2016 **IMPACT Factor - 3.9651**

भारतीय चित्रकला में अभिव्यक्तिकरण

डा0 अलका सोती
विभागाध्यक्षा. (चित्रकला विभाग)
एस.बी.डी.महिला महाविद्यालय, धामपुर (बिजनौर)

कला कल्याण की जननी है। प्राचीन भारत में कला हमारे जीवन की अभिव्यक्ति बनी हुई थी। चित्रकला वस्तुतः जीवन की अभिव्यक्ति है। वेद, वेदांग ,काव्य,कोश सभी में किसी न किसी रूप में चित्रकला अर्न्तनिहित है। इस धरती पर मनुष्य की उदय बेला का इतिहास कला के ही हाथों से लिखा गया। शिवात्मा सर्जना शक्ति में होने के कारण सृष्टि के समस्त पदार्थों में उसी का बिम्ब है। वह अनन्त रूप है और उसके इन समस्त रूपों की निश्पत्ति ही कलाकार (परमेश्वर) है। जितने भी तत्वविद साहित्य सृष्टा और कला सेवी हुए उन सबने भिन्न 2 भागों से उसी एकमेव लक्ष्य का अनुसंधान किया है। कला की आज जो परिभाषा की जा रही है, वह पहले की अपेक्षा भिन्न है। शिल्प और कला विषयक प्राचीन ग्रन्थों में कला को हस्तकौशल चमत्कार प्रदर्शन या वैचित्रय से बढकर ऊँचा स्थान नहीं दिया गया, अवश्य ही उसको साहित्य से अलग करके देखा जाता रहा है। उसको वस्तु का रूप सँवारने वाली विशेषता कहा गया है, जैसा कि क्षेमराज की शिवसूत्र विर्षिणी से स्पष्ट है ''कला यति स्वरूप आवेश्यति वस्तुनि वा।'' किन्तु परवर्ती युगों में और वर्तमान काल में कला को जिस रूप में ग्रहण किया जा रहा है उसका दायरा न तो वस्तु सँवारने मात्र तक ही सीमित है और न उद्देश्य हस्तकौशल ही माना जाता है। इसी कारण ईश्वर की कर्तृत्व शक्ति का संकुचित रूप जो हमको बोध के लिए मिलता है, वही कला है।

चित्रकला के साथ–2 भिन्ति चित्रों का भी विकास हुआ। जोगीमारा गुफा की भिन्ति चित्र अब तक प्राप्त भित्ति चित्रों में सबसे अधिक प्राचीन है। प्राचीन भारतीय साहित्य में चित्रकला से सम्बन्धित इतनी अधिक सामग्री प्राप्त होती है कि उसके अनुशीलन एवं मूल्यांकन के लिए एक विशाल ग्रन्थ की रचना की आवश्यकता पडेगी। वैदिक युग से लेकर सांतवी आंठवीं शताब्दी तक जो कुछ भी वाड0भय है, उसमें यत्र तत्र सर्वत्र चित्रकला की चर्चा है।

कला में रूप के सिद्धान्त से केवल रूप ही नहीं समस्त जीवन का आधार ही विकसित होता है। कला के रूप तथा अभिव्यक्ति में आन्तरिक एवं अनिवार्य सम्बन्ध है। कला भी बौद्ध, ईसाई, इस्लामी ,हिन्दू अथवा जैन आदि नहीं हो सकती । वह केवल अपनी आकृति रचना की सुषमा को इनके विषयों के हेतु समर्पित करती है। हाँ कला कृतियाँ अवश्य धार्मिक होती है। तीसरी शती ई0 से आठवी शती तक गुप्त काल के आधीन वास्तु शैली और चित्रकला फलती फूलती रही। दूसरी शती से सातंवी शती तक अजन्ता और बाघ चित्रण का परम्परागत इतिहास देखने को मिलता है। यह भिन्ति चित्रण परम्परा के आधीन विकसित हुआ है। इस भित्ति चित्रण की परम्परा के विकास में ब्राहमण जैन और बौद्ध धर्म का विशिष्ट योगदान रहा है।

330 ई0 से 530 ई0 तक के समय में गुप्तकाल की सभ्यता ने मध्यकालीन हिन्दू सभ्यता का रूप प्राप्त कर लिया था। बौद्ध एवं जैन धर्म दोनों ही भारत में साथ–2 पनपे। बौद्ध धर्म दक्षिण भारत में नवीं शताब्दी तक तथा बंगाल में 12 वीं शताब्दी तक रहा। परन्तु जैन धर्म आज के युग तक फैला हुआ है।

भारतीय कला एवं शिल्प का दर्शन सिन्धु घाटी की सभ्यता के बाद एक दीर्घ अन्तर से ईसा की तीसरी शतीपूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य कालीन कला के अन्तर्गत होता है। भारतीय कला, भारतीय संस्कृति का अंग है। जिसमें सांस्कृतिक मूल्यों के साथ–2 मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति उसका प्रमुख उददेश्य है। आघ्यात्मिक अनुभूति के आधीन भारतीय चित्रकला का प्रमुख उद्देश्य अर्थ, काम और मोक्ष है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानव की चेतना चाहे वह ज्ञान प्रधान हो, चाहें संवेदना प्रधान अथवा चेष्टा प्रधान एक प्रकार की वृप्ति या सुख की और सदैव अग्रसरित होती रहती है, जिसके आस्वादन को कला की परिभाषिक शब्दावली में अभिव्यक्ति की अनुभूति कहते है। अभिव्यक्ति , भंगिमा और प्रेषणीयता के माध्यम की दृष्टि से कलाओं में कल्पना, बिम्ब प्रतीक विषय और विधान आदि तत्वों की स्थापत्य,मूर्ति,चित्र, काव्य और संगीत में समानता है। अतः अभिव्यक्ति का उददेश्य भी समान ही पाया जाता है। प्राचीन भारतीय चित्रकला रस चित्रण के रूप में एक श्रेष्ठ कला है और जिसका स्थान विश्व की श्रेष्ठ कलाओं में सर्वोत्कृष्ट होना चाहिए, क्योंकि अभिव्यक्तिकरण की इतनी सशक्त प्रक्रिया भारतीय आधुनिक चित्रकारों का भी मार्गदर्शन करने में समर्थ है।